B.A I st yr.

तत्पुरुष समास Contd.

933. अर्धं नपुंसकम् - 2।2।2
यह विधिसूत्र है। अर्थ यह है कि यदि अर्धं पद नपुंसक लिङ्ग वाची हो तो एकत्व का बोध कराने वाले अवयववाचक सुबन्त पद का तत्पुरुष समास होता है। यथा - अर्धपिप्पली, लौ० वि० - अर्धं पिप्पल्याः, अ० वि० - अर्ध + अम् , पिप्पली + ङस्।
'अर्धं नपुंसकम्' सूत्रानुसार नपुंसक लिंगवाची अर्धम्' पद का अवयवी पिप्पल्याः सुबन्त पद के साथ समास हुआ। 'कृत्त०..' से प्राति०, 'सुपो..' विभक्ति का लोप, प्रथमा..' उपसर्जन संज्ञा, 'उपसर्जनं..' से पूर्व निपात होकर अर्ध + पिप्पली बना, पुनः प्रातिoसंज्ञा, स्वादि कार्य एवं 'हलङ्याब्भ्यो - दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' से सु का लोप होकर 'अर्धपिप्पली' बना।

934. सप्तमी शौण्डैः 2।1।40
यह विधिसूत्र है। शौण्डैः - शौण्डादि गणों के बारे में बतलाने वाला है। इसके अन्तर्गत शौण्ड, धूर्त, कितव आदि शब्द आते हैं। सूत्र का अर्थ है कि सप्तम्यन्त पद का शौण्डादि शब्द के साथ समास होने पर वह तत्पुरुष संज्ञक होता है। यथा - अक्षशौण्डः, लौ० वि० अक्षेषु शौण्डः अ० वि० - अक्ष + सुप् + शौण्ड + सु।
'सप्तमी शौण्डैः' सूत्रानुसार सप्तम्यन्त अक्षेषु 'पद का' शौण्डः'.. पद के साथ सप्तमी तत्पुरुष समास हुआ। 'कृत्त०,' सुपो.. 'प्रथमा..' 'उपसर्जन', पुनः प्राति० संज्ञा, स्वादि कार्य 'अक्षशौण्डः' रूप सिद्ध हुआ।

935. ~~दिक्संख्यायाम्~~
दिक्संख्ये संज्ञायाम् - 2।1।50
यह विधिसूत्र है। यदि दिक्वाची एवं संख्यावाची पद समानाधिकरण वाले हों तो सुबन्त संज्ञा पदों का तत्पुरुष समास होता है। यथा - पूर्वेषु कामशमी — लौ० वि० - पूर्वा इषुकामशमी, अ० वि० - पूर्वा + सु + इषुकामशमी + सु।
'दिक्संख्ये संज्ञायाम्' सूत्रानुसार दिशावाची 'पूर्वा' शब्द का 'इषुकामशमी' सुबन्त पद के साथ समास हुआ। 'कृत्त०' - से प्राति० संज्ञा, 'सुपोधातु..' से विभक्ति लोप।

Scanned with CamScanner

प्रथमा निर्दिष्टं० से उपसर्जन संज्ञा, 'उपसर्जनं..' से पूर्वनिपात। आद्गुणः से उसका गुण होकर 'पूर्वेषुकामशमी' की पुनः प्राति० संज्ञा, 'स्वौजस..' से 'सु' विभक्ति लगाकर 'पूर्वेषुकामशमी' रूप सिद्ध हुआ।

(5) सप्तर्षयः — लौ० वि० — सप्त च ते ऋषयः, अ० वि० — सप्तन् + जस्, ऋषि + जस्। Same as पूर्वेषुकामशमी।

936. तद्धितार्थोत्तरपद समाहारे च — 2।1।51

यह विधिसूत्र है। यदि तद्धितार्थ-विषय-पद (अर्थात् तद्धित के अर्थ वाले पद) उत्तरवर्ती पद हो एवं समाहार वाचक हो, तो दिक्वाचक और संख्यावाची पद का समानाधिकरण-सुबन्त के साथ तत्पुरुष समास होता है।

वार्त्तिक — सर्वनाम्नो वृत्तिमात्रे पुंवद्भावः।

'वृत्तिमात्र अर्थात् समास, कृदन्त एवं तद्धित आदि में सर्वनाम का पुंवद्भाव होता है।

यथा — पूर्वशालः — लौ० वि० — पूर्वस्यां शालायां भव, अ० वि० पूर्वा + ङि + शाला + ङि।

'तद्धितार्थोत्तर पद ...' सूत्रानुसार दिशावाची पूर्वा शब्द के साथ शाला सुबन्त पद के साथ समास हुआ। 'कृत्तद्धित..' से प्राति० संज्ञा, 'सुपो..' विभक्ति लोप, प्रथमा...० उपसर्जन संज्ञा, 'उपसर्जनं..' से पूर्वनिपात, पुनः प्राति० संज्ञा,

'दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ञः..' तद्धित प्रत्यय उत्तरपद में रहने के कारण (ञ — अ) पूर्वशाल + अ — पूर्वशाल, स्वादि कार्य होकर 'पूर्वशाला' रूप सिद्ध हुआ।

937. दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ञः — 4।2।107

यह विधिसूत्र है। सूत्र का अर्थ है संज्ञा भिन्न दिशावाचक शब्द के पूर्वपद में रहने पर 'शेष' अर्थ में 'ञ' प्रत्यय होता है। यह 'ञ' प्रत्यय 'अण्' ~~प्रत्यय~~ प्रत्यय का बाधक है।

UMA PATHAK
Dept. of Sanskrit
B.A. 1st Yr.
28.4.2020

Scanned with CamScanner